सोमवार • 22.11.2021

अमर उजाला 05

खेती किसानी

नौवें भारतीय बागवानी सम्मेलन के अंतिम दिन किसान और वैज्ञानिकों का हुआ संवाद

एक एकड़ में एक साल में पांच फसलें, पांच लाख की कमाई

फतेहपुर के औंग के किसान ने पेश की मिसाल, कुलपति ने किया सम्मानित

संवाद न्यूज एजेंसी

कानपुर। अगर किसान धान और गेहूं समेत परंपरागत खेती को छोड़कर सह फसली मॉडल को अपना आधुनिक खेती करें तो वह आम किसान की अपेक्षा पांच गुना कमा सकते हैं। यह बात रविवार को सीएसए में चार दिवसीय भारतीय बागवानी सम्मेलन के अंतिम दिन किसानों और वैज्ञानिकों के संवाद कार्यक्रम में फतेहपुर के औंग से आए प्रगतिशील किसान राम सिंह पटेल ने कही। बताया कि वह एक एकड़ खेत में एक साल में लहसुन, पपीता, मक्का, हल्दी और परवल की पैदावार कर लगभग पांच लाख रुपये कमा लेते हैं। वहीं, आम किसान की एक एकड़ से कमाई 70-75 हजार है। कुलपति डॉ. डीआर सिंह ने राम सिंह पटेल को सम्मानित किया।

मुख्य अतिथि के तौर पर राष्ट्रीय कृषि और ग्रामीण विकास बैंक कानपुर नगर और देहात की विकास प्रबंधक सुमन लता उपस्थित रहीं। कुलपति ने प्रगतिशील किसानों से अन्य किसानों को सीख लेने की बात कही। इस मौके पर डॉ. एचजी प्रकाश, डॉ. धनंजय सिंह और डॉ. खलील खान आदि मौजूद रहे।

सीएसए के कुलपति डॉ. डीआर सिंह और सुमन शुक्ला ने फतेहपुर के किसान राम सिंह पटेल को प्रतीक चिह्न देकर सम्मानित किया। अमर उजाला

पहले तीन फसलें, फिर दो

राम सिंह पटेल ने बताया कि वह अपने खेत में सात फीट लंबी क्यारी बनाते हैं, जिसमें लहसुन बोते हैं। मेड़ पर पपीता और उन पौधों के बीच में एक गांठ परवल की बोते हैं। इन फसलों को सितंबर में बोया जाता है। मार्च महीने में लहसुन को खोदते ही उसी क्यारी पर मक्का लगा देते हैं। मई महीने में मक्के के बीच में हल्दी बो देते हैं। बताया कि एक एकड़ में 50-60 क्विंटल लहसुन होता है, जो कि 10 हजार रुपये क्विंटल बिकता है। पपीते के चार सौ पौधे लगते हैं, एक पौधे की कीमत एक हजार रुपये है। केवल पपीते से ही चार लाख की आमदनी हो जाती है। 40 क्विंटल परवल होता है, जो कि एक लाख और 80 क्विंटल हल्दी होती है जो कि एक लाख में बिकती है। मक्के की फसल 20-25 हजार में बिकती है। परवल, हल्दी और मक्का से लागत निकल आती है। लहसुन और पपीते का पैसा लाभ के रूप में बच जाता है।

विकसित की हाइब्रिड प्रजाति

भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद (आईएआरआई) पूसा के वरिष्ठ सब्जी वैज्ञानिक डॉ. गोगराज सिंह जाट ने बताया कि उन्होंने टमाटर की पूसा रक्षित प्रजाति को विकसित किया है। यह प्रजाति पॉली हाउस के लिए है। यह एक हेक्टेयर में 45 टन का उत्पादन 80 दिन में देती है। जबकि अन्य प्रजातियां 110 दिन में 35-38 टन उत्पादन देती हैं। करेले की पूसा हाइब्रिड 4 और पूसा हाइब्रिड 5 प्रजाति विकसित हैं। इन प्रजातियों में दो नर फूल आने पर एक मादा फूल आ जाता है। जबकि अन्य प्रजातियों में 20-25 नर फूल आने पर एक मादा फूल आता है। जब मक्खी नर से मादा पर परागण करती है तभी मादा फूल फल के रूप में परिवर्तित होता है। बताया कि एक मादा एक ही फल के रूप में परिवर्तित होती है। यह प्रजातियां 25 टन प्रति हेक्टेयर उत्पादन देती हैं, जबकि अन्य प्रजातियां 18 टन उत्पादन देती हैं।

दैनिक जागरण 6

कानपुर, 22 नवंबर, 2021

संवाद में विज्ञानियों से किसानों ने पूछे सवाल

जासं, कानपुर: चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विवि में भारतीय बागवानी सम्मेलन का समापन हो गया। रविवार को कृषक-विज्ञानी संवाद हुआ। फतेहपुर, कानपुर देहात की किसान महिलाएं व पुरुषों ने कई सवाल पूछे। कुछ ने अपने खेती करने के तरीके व अनुभव साझा किए।

संवाद कार्यक्रम की अध्यक्षता विवि के कुलपति डा. डीआर सिंह ने की। मुख्य अतिथि राष्ट्रीय कृषि और ग्रामीण विकास बैंक (नाबार्ड) की प्रबंधक सुमन शुक्ला ने शिरकत की। प्रधान वैज्ञानिक डा. विश्वबंधु पटेल ने बताया कि चार दिन तक कार्यक्रम में 600 प्रतिभागी उपस्थित हुए। 290 वैज्ञानिकों ने आनलाइन अपने पेपर प्रजेंट किए। 124 ने ओरल प्रजेंटेशन दिया। कुलपति डा. डीआर सिंह ने कहा कि प्रगतिशील किसानों की सफल कहानियों से अन्य किसान भी प्रेरणा लें और अधिक लाभ प्राप्त करें। नाबार्ड की प्रबंधक ने बताया कि ग्रामीण एवं कृषि क्षेत्र को बढ़ावा देने के लिए बैंक लगातार किसानों को मदद कर रहा है। उत्कृष्ट शोधपत्र प्रस्तुत करने वाले विज्ञानियों व शोधार्थियों को सम्मानित किया गया। डा. एचजी प्रकाश, डा. धनंजय सिंह, मीडिया प्रभारी डा. खलील खान रहे।

राष्ट्रीय सहारा

कानपुर। सोमवार • 22 नवम्बर • 2021

बागवानी सम्मेलन में किसान सम्मानित

कानपुर (एसएनबी)। कानपुर के निकटवर्ती फतेहपुर जिले के गांव औंग निवासी किसान राम सिंह पटेल के खेती-बारी के तौर तरीकों ने भारतीय बागवानी सम्मेलन में आये कृषि वैज्ञानिकों को खूब प्रभावित किया। राम सिंह कृषि वैज्ञानिकों की बताई हुई तकनीकों का प्रयोग कर प्रति एकड़ जमीन पर प्रति वर्ष सघन पद्धति से लहसुन, पपीता, मक्का, परवल आदि की खेती कर ₹ 5 लाख से भी ज्यादा आय प्राप्त कर रहे हैं। किसानों एवं वैज्ञानिकों ने उन्हें सराहा। सीएसए कुलपति डॉ.डीआर सिंह ने अंगवस्त्र व प्रमाणपत्र देकर राम सिंह को सम्मानित किया।

चार दिवसीय सम्मेलन के समापन अवसर पर कृषक-वैज्ञानिक संवाद कार्यक्रम आयोजित किये गये। कुलपति डॉ.डीआर सिंह की अध्यक्षता में संपन्न इस अंतिम सत्र की मुख्य अतिथि राष्ट्रीय कृषि एवं ग्रामीण विकास बैंक कानपुर नगर एवं देहात की विकास प्रबंधक सुमन लता रहीं। कृषक-वैज्ञानिक संवाद कार्यक्रम के तहत प्रगतिशील किसानों ने अपनी जुबानी अपनी सफलता की कहानी बताई। कार्यक्रम का मकसद अन्य किसानों को भी प्रगतिशील ढंग से कृषि कार्य के लिए प्रोत्साहित करना था।

सीएसए में भारतीय बागवानी सम्मेलन के अवसर पर प्रगतिशील किसान राम सिंह पटेल को सम्मानित करते डॉ.डी.आर सिंह। फोटो : एसएनबी

मुख्य अतिथि सुमनलता ने इस मौके पर कहा कि ग्रामीण एवं कृषि क्षेत्र को बढ़ावा देने के लिए बैंक लगातार किसान भाइयों को ऋण प्रदान कर रही है, जिससे किसान लाभान्वित भी हो रहे हैं।

कृषक-वैज्ञानिक संवाद के बाद सम्मेलन में चार दिनों के दौरान विभिन्न कृषि व शोध पहलुओं पर किये गये विचार मंथन को संकलित किया गया। इसके बाद विदाई सत्र आयोजित कर सम्मेलन के प्रतिभागियों को विदा किया गया। वैज्ञानिकों-कृषकों को विवि के विभिन्न शोध प्रक्षेत्रों का भ्रमण भी कराया गया। स्थानीय आयोजक सचिव डॉ.एचजी प्रकाश, डॉ.धनंजय सिंह, मीडिया प्रभारी डॉ.खलील खान सहित अन्य लोग मौजूद थे।

वर्ष 15 अंक 318 पृष्ठ-8 मूल्य-1 रू0 कानपुर, सोमवार 22 नवम्बर 2021

कानपुर व औरैया से एक साथ प्रकाशित, लखनऊ, इलाहाबाद, बुंदेलखंड, फतेहपुर, इटावा, कन्नौज, मैनपुरी,ऐटा, हरदोई, उन्नाव,कानपुर देहात में प्रसारित

RNI N.UPHIN/2007/27090

दैनिक
नगर छाया
आप की आवाज़.....

चार दिवसीय भारतीय बागवानी सम्मेलन का हुआ समापन

कानपुर (नगर छाया समाचार)। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर में चल रहे चार दिवसीय भारतीय बागवानी सम्मेलन के चौथे एवं अंतिम दिन आज कृषक वैज्ञानिक संवाद कार्यक्रम हुआ। इस संवाद कार्यक्रम में जनपद कन्नौज, फतेहपुर एवं कानपुर देहात के कृषकों ने भागीदारी की। दूरदराज के जनपदों से आए किसानों ने अपनी खेती करने के तौर-तरीकों को वैज्ञानिकों के समक्ष बताया। कि वे वैज्ञानिकों द्वारा बताई हुई तकनीकों का अपने खेतों में प्रयोग कर रहे हैं जिससे उन्हें खेती में आशातीत लाभ मिल रहा है। इसी क्रम में जनपद फतेहपुर के गांव अौंग के किसान राम सिंह पटेल ने बताया कि वह 1 एकड़ खेत में सघन पद्धति से लहसुन, पपीता, मक्का,परवल आदि की खेती कर प्रति एकड़ प्रतिवर्ष , 5 लाख से भी ज्यादा की आय प्राप्त कर रहे हैं। जिसे किसानों एवं वैज्ञानिकों ने सराहा। इस अवसर पर कुलपति डॉ डी.आर.सिंह ने कृषक राम सिंह पटेल को अंग वस्त्र एवं प्रमाण पत्र देकर सम्मानित भी किया। कृषक वैज्ञानिक संवाद कार्यक्रम की अध्यक्षता कुलपति डॉक्टर डीआर सिंह ने की। जबकि मुख्य अतिथि राष्ट्रीय कृषि और ग्रामीण विकास बैंक कानपुर नगर एवं देहात की विकास प्रबंधक श्रीमती सुमन लता जी उपस्थित रही। कार्यक्रम में कुलपति ने अपने संबोधन में कहा कि जिन प्रगतिशील किसानों ने अपनी सफलता की कहानी स्वयं की जुबानी कही है। उसे अन्य किसान भी अपनाएं जिससे उन्हें अधिक से अधिक लाभ प्राप्त हो। इस अवसर पर राष्ट्रीय कृषि और ग्रामीण विकास बैंक की प्रबंधक श्रीमती सुमन लता ने अपने संबोधन में कहा कि ग्रामीण एवं कृषि क्षेत्र को बढ़ावा देने के लिए बैंक लगातार किसान भाइयों को ऋण प्रदान कर रही है। जिससे किसान लाभान्वित भी हो रहे हैं। कृषक वैज्ञानिक संवाद के बाद विदाई सत्र शुरू हुआ जिसमें 4 दिनों से हुई वैज्ञानिक शोध परिचर्चा को संकलित किया गया। तत्पश्चात विश्वविद्यालय के प्रक्षेत्रओं का वैज्ञानिकों एवं कृषकों द्वारा भ्रमण भी किया गया। इस अवसर पर स्थानीय आयोजक सचिव डॉ एच जी प्रकाश, डॉक्टर धनंजय सिंह, मीडिया प्रभारी डॉ खलील खान एवं समस्त निदेशक, अधिष्ठाता एवं विभागाध्यक्ष सहित अन्य वैज्ञानिक एवं किसान उपस्थित रहे।

www.facebook.com/worldkhabarexpress www.twitter.com/worldkhabarexpress www.youtube.com/worldkhabarexpress

WORLD खबर EXPRESS

रविवार, 21-11-2021 अंक- 407

www.worldkhabarexpress.media
www.worldkhabarexpress.com

WORLD
खबर एक्सप्रेस
MID DAY E-PAPER

'कृषक वैज्ञानिक संवाद' में किसानों को दिए टिप्स

चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय में चार दिवसीय भारतीय बागवानी सम्मेलन का समापन

कानपुर। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय में चल रहे चार दिवसीय भारतीय बागवानी सम्मेलन के चौथे एवं अंतिम दिन आज 'कृषक वैज्ञानिक संवाद' कार्यक्रम हुआ। इस संवाद कार्यक्रम में जनपद कन्नौज, फतेहपुर व कानपुर देहात के कृषकों ने भागीदारी की। दूरदराज के जनपदों से आए किसानों ने अपनी खेती करने के तौर-तरीकों को वैज्ञानिकों के समक्ष बताया कि वे वैज्ञानिकों की बताई हुई तकनीकों का अपने खेतों में प्रयोग कर रहे हैं जिससे उन्हें खेती में आशातीत लाभ मिल रहा है। फतेहपुर के अौंग गांव के किसान राम सिंह पटेल ने बताया कि वह एक एकड़ खेत में सघन पद्धति से लहसुन, पपीता, मक्का,परवल आदि की खेती कर प्रति एकड़ प्रतिवर्ष 5 लाख से भी ज्यादा की आय प्राप्त कर रहे हैं जिसे किसानों व वैज्ञानिकों ने सराहा। इस अवसर पर कुलपति डॉ. डीआर सिंह ने कृषक राम सिंह पटेल को सम्मानित भी किया। कार्यक्रम की अध्यक्षता कुलपति डॉ. डीआर सिंह ने की जबकि मुख्य अतिथि राष्ट्रीय कृषि और ग्रामीण विकास बैंक, कानपुर नगर एवं देहात की विकास प्रबंधक सुमन लता रहीं। कुलपति ने कहा कि जिन प्रगतिशील किसानों ने अपनी सफलता की कहानी स्वयं की जुबानी कही है, उसे अन्य किसान भी अपनाएं जिससे उन्हें अधिक से अधिक लाभ प्राप्त हो। इस अवसर पर राष्ट्रीय कृषि और ग्रामीण विकास बैंक की प्रबंधक सुमन लता ने कहा कि ग्रामीण एवं कृषि क्षेत्र को बढ़ावा देने के लिए बैंक लगातार किसानों को ऋण प्रदान कर रही है जिससे किसान लाभांवित भी हो रहे हैं। कृषक वैज्ञानिक संवाद के बाद विदाई सत्र शुरू हुआ जिसमें चार दिनों से हुई वैज्ञानिक शोध परिचर्चा को संकलित किया गया। इसके बाद विश्वविद्यालय के प्रक्षेत्रओं का वैज्ञानिकों एवं कृषकों को भ्रमण भी कराया गया। इस अवसर पर स्थानीय आयोजक सचिव डॉ. एचजी प्रकाश, डॉ. धनंजय सिंह, मीडिया प्रभारी डॉ. खलील खान एवं समस्त निदेशक, अधिष्ठाता, विभागाध्यक्ष सहित अन्य वैज्ञानिक व किसान मौजूद रहे।

हिन्दुस्तान 08
कानपुर • सोमवार • 22 नवंबर, 2021

संक्षेप

वैज्ञानिक सलाह पर खेती से बढ़ेगी कमाई

कानपुर। वैज्ञानिक सलाह से अगर खेती की जाए तो किसान की कमाई सिर्फ दो गुना नहीं, बल्कि कई गुना बढ़ सकती है। इसका ताजा उदाहरण है फतेहपुर के किसान राम सिंह पटेल। यह सघन पद्धति से एक एकड़ खेत में लहसुन, पपीता, मक्का, परवल की खेती कर प्रति वर्ष पांच लाख रुपये का लाभ कमा रहे हैं। राम सिंह को भारतीय बागवानी महासम्मेलन के समापन समारोह में सम्मानित भी किया गया। इस मौके पर डॉ. एचजी प्रकाश, डॉ. वीके त्रिपाठी, डॉ. डीपी सिंह, डॉ. धनंजय सिंह, डॉ. रामबटुक सिंह रहे।